

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

परिवर्त्तिनि संसारे मृतः कोवा न जायते ।
सजातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम् ॥

* दशकुमारचरित भाषा *

पंडित रामस्वरूप शुक्लेन
सङ्क्षिप्तकाव्य मवलम्ब्य निर्मितासेयम् ।

मुरादाबादे
"लक्ष्मीनारायण" मुद्रणालये मुद्रिता.

पता—पंडित रामस्वरूप शुक्ल
बीच कठगर
मुरादाबाद.

जनवरी सन् १९००
प्रथमबार १०००

भूमिका ।

दोहा—सिये सुमिर पग कमलको, यातें विघ्न न होय ।
दशकुमार या काव्यकी, भाषा रच्यों वनाय ॥

प्रभ्यवर !

उक्त दशकुमारचरित काव्यके रचयिता श्रीमान् दण्ड्याचार्य्य जी हैं उन्होंने अपने इस काव्य में पद लालित्यता दर्शायी है अर्थात् जिनके उच्चारण करने से वाणीकी विचित्र शोभा होती है, संसारमें जन्म लेने के यही दो फल हैं कि- काव्यामृत रसस्वादं संगमंसुजनैःसह,, अर्थात् सुन्दर२ काव्यरूपी अमृतको पान करना और सज्जनों की संगति करना यदि इस पवित्र कलिमल दहन जीवाग्रगण्यदेह भेष को धारणकर विविध प्रकारके किरातार्जुनीय माघादि काव्यों को नहीं दृष्टिगोचर किया तो इस शरीरका धरना वृथा है कारण कि-इनका मर्म इतना सहज करदिया है कि--जिन के अनुवादको देख साधारण मनुष्य भी भली प्रकार समझसक्ता है परंतु ब्राह्मण जातिपर यह दशा है कि—जिनके बालक संस्कार विहीन हो (संस्कृत) विद्याका नाममात्र न ले यावनिक अँग्रेजी भाषाध्यन करनेमें कटि बद्ध रहते हैं ठीक है कि हमारे प्राचीन ऋषि मुनियोंके गर्भाधान पुंसवनादि क्रिया करने का यही फल था कि जिससे उनकी बुद्धि बाल्यावस्था सेही सुधरती रहे परंतु हा शोक ! आज कलिकाल में वह रीति लुप्त होगई और अनेक प्रकार के मत प्रचलित होगये इसीकारण मनुष्यों की मति भ्रम में पडगई शिवादि की प्रतिमामृत पूर्व जीवों का श्राद्ध करने का निषेध जोकि प्राचीन महर्षियों ने निर्माणकर कर्म विधि कथन की है उसे धूर्तोंने लुप्त करने की कमेटीबनाईहै उसका यही कारणहै कि वे जन्मसेही कुसंस्कार विहितहैं ॥

हमने इस ग्रंथ का भाषानुवाद इसकारण निर्माण किया कि यह ग्रंथ क्लिष्ट होने के कारण हरकिसी की समझमें नहीं आताथा और अतिविस्तृतथा तो इसकी संक्षिप्त सरलभाषा बनाई जिसकारस हरेक पानकर लाभ उठावैं परंतु इसके मुद्रण समय में तुच्छ मनुष्यों ने बडे २ विघ्न डालने चाहे बहुतही

१—हमने इस ग्रंथ के ९ सर्ग का भाषा परीक्षावाले विद्यार्थियों के लाभार्थ बनाया है वह कल्याण बंबई में छपा है इच्छा है कि पूर्ण करैंगे ॥

कुकुरधौंस की कुछभी न हुआ, कारण कि विघ्न विनाशाय मंगलमाचरेत् इस पंक्ति के अनुसार हमने पूर्व में ही मंगलाचरण कररखाथा इस से योग्यहै कि सबही अपने ग्रंथके पूर्व मंगलाचरण करैं,, नीच पुरुषों की यह प्रकृति है कि वे उच्चपदवीको पाकरभी अपनी स्वाभाविक कुल क्रमागत तुच्छता को नहीं छोड़ते जैसे कोई शृगाल किसी रंगरेज के रंगमें गिरपडने से नीलवर्ण युक्त होगया आरण्य में गया तो सब देखकर भागे उसने चिल्लाकर कहा कि मुझे साक्षात् ईश्वर ने इस बनका राजा बननेको भेजा है यह सुन सब जीवों ने निकट आय राज्यदिया एक समय सब सिंहादि उसके भृत्य बने बैठे थे आपने गीदड़ों का शब्द सुना तो वह भी हूवा २ ऐसा कोलाहल करनेलगा,, बस हमको इतनेसेही प्रयोजन था शेष हमारे निर्माण किये संस्कृतसागर ग्रंथ में देखलो और विशेषकर जिसने ऊंचा बनाय जात्यादि की गणना में कररक्खा है और भुर्जी आदि शब्द छिपारक्खे हैं उन के विषय ही विघ्नेच्छा होती है इस में भी, हम को एक दृष्टान्त स्मरण हुआ सुनिये जी ! किसी तपोवन में कोई महर्षि रहतेथे एक समय उनके समीप कुटीस्थ मूषक, विडालको देख भागा. यह देख ऋषिने दया से तप प्रभाव द्वारा विलावही बनाया फिर भी दैव दुर्विपाक से कोई कुत्ता आया उसे देख यह भागा तो ऋषिने इसे अपने तपोबल से इसको कुत्ता बनादिया एक समय सिंह को देख वह भागने लगा तो ऋषिने उसे शेर बनादिया तब इसके मन में यह अहंकारोत्पन्न हुआ कि यद्यपि मैं इस दशा में सिंह हूं तथापि लोग यही कहेंगे कि चुहे से इस ऋषिने उसको सिंह बनादिया इस से प्रथम इन ऋषिकोही भोजन करूं यह बिचार उन के ऊपरको चला तभी ऋषिने उसे शाप दिया कि चूहा हो उनके शापसे वह फिर भी चूहा होगया, यहां अब कोई जाति में नहीं बूझता इत्यादि उदाहरण अच्छीप्रकार समझ लो ॥

पं० रामस्वरूप शुक्ल.
(बीच) कठगर
मुरादाबाद.

॥ श्रीः ॥

दशकुमार चरित ।

(केवल भाषा)

मंगलाचरणम् ।

वन्देमुरारिंकिलकुंडलाभ्यां नृत्यंतमाभूषितकर्णभागम्
विनोदभूतामपितस्यराधांमनोज्ञवीणारवमोहितांताम्

एक मगधदेश में पुष्पपुरी का राजा राजहंस था उसकी वसुमती स्त्री थी, धर्मपाल पद्मोद्भव, सितवर्मा यह तीन मंत्री थे, धर्मपाल के सुमंत्र सुमित्र कामपाल पद्मोद्भव के सुश्रुत रत्नोद्भव सित वर्माके सुमति सत्यवर्मा, यह पुत्र उत्पन्न हुये सत्यवर्मा संसारको असार जान देशान्तरको चलागया कामपाल किसीकी आज्ञा न मान वेश्या संगमादि करनेलगा रत्नोद्भवभी वाणिज्यमें निपुणहो अन्य देशमें चलागया और सब मंत्रि पुत्र पिताओं के पितृलोक जानेपर निज२ धर्ममें तत्पर हुये थोड़ेही दिनोंपीछेराजा राजहंसका मानसार के साथ परस्पर द्वन्द युद्धहुआ तबही राजहंसने मानसारको पराजयकर दयासे फिरभी उसका राज्य उसीको देदिया एकसमय सिंहासनपर बैठेहुए राजाको एक गूढ़ पुरुष वर्णालिङ्गी आकर निवेदन करनेलगा देव ! मानी मालवेंद्र आपसे पराजय को प्राप्त हो शिवका आराधन कर एक वीरघातिनी गदापाय फिर युद्ध में कटिबद्ध होरहा है आपका शत्रु देवसहाय युद्धको आताहै इससे अब युद्ध कर-

ना योग्य नहीं इस प्रकार मंत्रियों से बहुवार कहाहुआ भी राजा उनके वाक्यको न मान अखर्व गर्वसे युद्धको संनद्ध हुआ जातेही उस प्रचंडबल शत्रुको झटही रोकदिया फिर विजयाभिलाषी मालवेंद्रमगधेन्द्रके ऊपरउस शिवदत्त गदा का प्रहारकियाकिसीतरह घोड़ेरथले राजाको एक विंध्याटवी में लेगये विजय श्रीसनाथ मानसारभी उस अनाथ राज्यको निज अधिकार में करलिया इसतरह पराजितहुये राजहंसने ऋषिवामदेवके आश्रममें प्रवेशकिया और कहाभी भगवन् ! मालवेंद्र प्रबल देवबलसे मुझको जीत अभीतहो राज्य कर-रहाहै सो मैं भी जैसे उसको जीतूं वह यत्न बताइये यह सुन मुनि बोले राजन् कुछदिन धैर्य कीजिये सकल रिपुकुल म-र्दन राजनंदन देवीके गर्भमेंहैं राजा यह मुनिका वचन मान मौनहो स्थित रहा कुछदिनों बाद सुमती जो वसुमती सो सुकुमार कुमारके तुल्य पुत्रको उत्पन्न करतीहुई फिर थोड़े ही दिनोंके पीछे सुमति सुमंत्र, सुमित्र, सुश्रुत इन मंत्रियों के प्रमति मंत्र गुप्त मित्रगुप्त विश्रुत यह चार पुत्र हुये यही राजकुमार राजवाहननामवाला इन चारों सचिव कुमारोंके साथ बाल क्रीड़ा करता२ शशिकलावत् बढ़ने लगा ॥

उपहार वर्मोत्पत्तिकथा ।

एकसमय कोई मुनि राजाको एक कुमार समर्पणकर बोला राजन् ! मैं बनमें जाय एक वृद्धा स्त्रीको देख पूंछा वह रोकर मुझसे कहनेलगी सौम्य ! एकसमय मिथिलेश्वर प्रहारवर्मा राजहंसके पुरको अपने पुत्रोत्सव में आयाथा तभी मानसारके साथ युद्धमें राजहंस सहित पराजित हो

निज प्रिया प्रियम्वदाकेसाथ निज नगरको जाताहुआ मार्ग हीमें किरातोंसे लुट भागगया इसके यमज दो पुत्रथे मैं और मेरी पुत्री ही दोनों धायें थीं हम राजा को न पकड़ सके तभी एक सिंह सन्मुख देखा मैं तो भय भीत हो धरणीपर गिरपडी कुमार मेरे करसे छुटकर किसी कपी-लाशवके भीतर गुसरहा उसीसमय किसी किरात के मुक्त शरसे वह सिंहभी मरगया उस कुमारको किरातही लेगये हैं दूसरे कुमार को लिये पुत्री भी मेरी नजानै कहां गई फिर मुझे किसी गोपलने अब्रण किया सो मैं व्याकुलहो मिथिलाही को जाती हूं मैं भी आप के मित्रका पुत्र जान फिरता२ चंडी मंदिरके निकट किरातोंके समीप जाय कहा भोर२ किराता मैं वृद्ध ब्राह्मण हुं, मेरा पुत्र खोगया है जो आप किसी ने देखा हो तो बताइये सुनते ही कुमार को मुझे देदिया मैं आपकें पास लेआया राजा भी निज मित्र प्रहारवर्माके पुत्रको जान पुत्रवत्ही पालन लालन करनेलगा

अपहार वर्मोत्पत्ति कथा ।

कभी राजा किसी तीर्थ स्नानको जाताहुआ भिल्लनीकी गोद में एक बालक देख बोला किसका यह कुमार है सत्य कह यह सुन वह बोली राजन् इसी मार्गमें जातेहुये मिथिलेश्वर का धन हर किरात लाये परन्तु यह पुत्र हमरे पति को देदिया राजा मुनि बचनानुसार प्रहार वर्मा के द्वितीय पुत्र को चिन्ता में निश्चयकर शबरी को कुछ धन दे उस कुमार का अपहारवर्मा नाम रख वसुमती को देदिया ॥

"पुष्पोद्भवोत्पत्ति कथा"

कभी ऋषि वामदेवका शिष्य सोमदेव शर्म्मा किसी कुमारको राजा के अर्पणकर कहनेलगा राजन् मैं रामतीर्थ से आताहुआ वन में एक वृद्धा को देख किसका यह कुमार है यह कही वह रुदनकर बोली मुने ! कालयवन द्वीप में कालगुप्त एक वैश्यथा रत्नोद्भव वहीं जाय उस वैश्यकी सुवृत्ता कन्याको विवाह कुछदिनोंकेबाद गर्भ होनेसे श्वसुर से पूछ जहाजपर चढ़ पुष्पपुरको चलनेलगा दैव दुर्विपाक से वह जहाज टूटगया मैं किसीतरह उसकी स्त्रीको पार लाई न जाने अब रत्नोद्भव कैसेहै—

सुवृत्ताने यहीं इस पुत्रको उत्पन्न किया न जाने वह कहां गई मैं इसको यहां लेआई यह बात करते २ ही एक बनगज आगया स्थविरा हाथी के भयसे वह यहीं इसको छोड़ कहीं चली गई मैं तो एक वृक्ष की छाया में छिप रहा ज्योंहीं इस कुमारको हाथीने सूंड से पकड़ा त्योंहीं एक सिंह को हाथी के ऊपर दौडते देखा यह इस बालकको छोड़सिंह के युद्ध में प्राणों का भी त्याग मरगया सिंह भी कहीं चला गया तभी एक वानरने फल इसको जान ग्रहणकर बालक है यह पहिचान छोड भागगया मैं फिर उस स्त्रीको न पाय गुरुकी आज्ञासे आपके पास लाया राजाने उस रत्नोद्भव के पुत्र का नाम पुष्पोद्भव रख सुश्रुतको बुलाय यह तेरे भ्राता का पुत्र यह कह देदिया उसने भी पुत्रवत् पाला ॥

"अर्थपालोत्पत्तिकथारम्भः"

कभी राजा वसुमती के पास एक कुमार को देख बोला

देवी ! यह किसका पुत्र है यह सुन रानी बोली देव ! रात मुझे कोई यक्षणी जगाकर कहने लगी देवी मैं मणिभद्रकी पुत्री तुम्हारे मन्त्रि पुत्र कामपाल की स्त्री तारावली हूं कुबेर की आज्ञानुसार इस निज कुमार को आपकी सेवा में अर्पण करती हूं यह कह चली गई राजा सुमन्त्र को बुलाय अर्थपाल यह तेरे भ्राता का पुत्र है यह कह अर्पण किया ॥

सोमदत्तोत्पत्तिकथारम्भः ।

कभी मुनि वामदेव का शिष्य एक कुमारको दे बोलाराजन् कावेरी के किनारे किसी स्थविरा को रुदन करते देखा और क्यों तू रोरही है यह पूछा भी तोवहबोली मुने!एक ग्राम में सत्यवर्म्मा किसी ब्राह्मणकी पुत्री काली कोविवाह उसके सन्तान के न होने से उसीकी पुत्री गौरीको विवाह एक पुत्र उत्पन्न कियाएकदिन काली भगिनीकी हिरससे मुझ धाय के साथ इस कुमारको लाय (मयेमेरे) कावेरी के किनारे फेंक के चलीगई मैं नदी में उतर इस कुमरको पकड़ किसी बहते हुए पेड़पर चढ़गई वहां सर्पने मुझे डसलिया वृक्ष भी किनारे आलगा इस कुमारकी आपरचा करो यह कह वह परलोक को सिधारी मै भी इसकुमार को आपकेही पास लेआया उसका सोमदत्त नामधर सुमति को बुलाय यह तेरे भ्राताका पुत्र है यहकह अर्पण किया फिर सब कुमारों से संयुक्त राजवाहन को राजा देख परमानन्द को प्राप्तहुआ ॥

इतिश्री मत्पण्डितगणेशप्रसादसूनुनारामस्वरूपशर्म्मणाकृतायांदशकुमार चरित्रभाषायांकुमारोत्पत्तिर्नामप्रथमोच्छ्वासः ।

एकसमय वामदेवजी राजहंस से कहने लगे राजन् ! मित्रों से संयुक्त इस तेरे पुत्र का यह दिग्विजय का समय है सो तू इस को भेज ऐसे मुनि से कहा हुआ क्षितिपति शुभ मुहूर्त्त में सपरिवार निज कुमारको दिग्विजयार्थ आज्ञा दी चलते २ राजबाहन ने एक बन में जाय किरातरूप एक ब्राह्मणकुमार को देखा, कौन है तू किस वास्ते बियाबान जंगल में घूमरहा है यह राजबाहन से पूंछाहुआ बोला महाभाग ! मैं मातंग नाम ब्राह्मण हूं ब्राह्मणकी रक्षा के करने से बीती हुई इस रात में मुझको प्रसन्न हुए शिवजी स्वप्न में बोले मातंग ! दंडकारण्य की नदी के तट के निकट कोई चौमुखी गुफा है उसी बिल से पाताल जा तू वहां का राजा होगा तेरा सहायकारी एक राजकुमार भी कल वा परसों यहीं आवैगा सो मैं आपके आकार से जानतां हू कि वही आप हैं मेरी सहाय कीजिये यह सुन अंगीकार कर राजकुमारने निद्रा परतन्त्र मित्रवर्ग को छोड मातंगके साथ उसी विल द्वारा पातालको प्रवेश किया और उस महेश्वर दत्त ताम्रपत्रके अनुसार मातंग राजबाहन के देखते२ज्वाला जालों से प्रज्वलित अग्नि में मंत्र पूर्वक देहको हवन करदिव्य मूर्त्तिको प्राप्त हुआ शीघ्रही कोई कालिन्दी नाम असुर नन्दनी उसको बरलेती हुई, मातंग भी राजबाहन की आज्ञानुसार यथाविधि पाणिग्रहण कर पाताल के राज्यको निज अधिकार कर परम आनन्द को अनुभव करने लगा राजवाहनभी कालिन्दी प्रदत्त भूंख प्यासकी नाशक मातंग से मणिको लेकर उसी विल द्वारा निकला वहां मित्रगण

को न देख उद्विग्न चित्त हो धरणी में भ्रमण करने लगा फिरता २ विश्रामार्थ एक वगीचे में प्रवेश होतेही रमणीय जनों के साथ रमण करते सोमदत्तको देखा और पूछा यह स्त्रीआदि कौनहैं वह भी निजवृत्तान्तको कहने लगा—

इतिश्रीमत्पण्डितगणेशप्रसादसूनुनारायणस्वरूपशर्म्मणाकृतायां
दशकुमारचरितेभाषायांद्विजोपकृतिर्नामद्वितीयउच्छासः।

देव ! आपको ढूढ़ते २ मैंनेभी प्यास से व्याकुल एक नदीके जलको पीतेहुये उज्वल रत्नको देखा उसे उठाकर विश्रामार्थ किसी मंदिर में गया वहां बहुतनय समेत एक दीन वृद्ध ब्राह्मणको देख पूंछा आप कौन हैं और यह सेना किसकी है यह सुन ब्राह्मण वोला सौम्य ! माता रहित इन पुत्रोंको भिक्षासे पालता यहां वसता हूं और यह सेना मत्तकालललाटेश्वर की है यही मत्तकाल इस पटने के राजा वीरकेतु की तरुणी रत्नवाम लोचना कन्याको सुन वलात्कार से हरलाया है अब यह सिकार के वास्ते यहां ठैररहा है और वीरकेतु कामानपाल नाम मंत्रीभी जयकी अभिलाषा से गुप्तहो यत्न कररहा है यह सुन मैंने इस ब्राह्मणको निर्धन जान रत्न देदिया और वह चलाभी गया मैंभी वहां सोगया कुछ देर वाद वहीं ब्राह्मण ने राजदूतों के साथ आकर मुझको चोर वताया वह दूत मुझे बांध कारागार में जाय यह तेरे मित्रहैं ऐसे किनीको दिखाया आप यहां क्यों दुःख भोगरहे हो यह सुनकर चोर वीर मुझसे कहने लगे सौम्य ! वीरकेतु के मंत्री मानपाल के हम किंकर हैं मंत्री की आज्ञानुसार सुरंग द्वारा यहां आ-

कर राजाको न पाय धन चुराकर लेगये, येही धन चुरा-
कर लेगये हैं यह मत्तकाल जान हमको पकड़ धन छीन
एक रत्नके न मिलने से कारागार में डाल दिया वह आप
के पास रत्न मिलने से यह तेरे मित्रहैं इस प्रकार आपको
कहा मैंभी यह सुन अपने और उनके बंधनों को काट मा-
नपाल के पास पहुँचा इस मेरे पराक्रम को देख वह मंत्री
बड़ा प्रसन्नहुआ कुछदेर बाद मत्तकाल के दूत आये और
कहा आपके यहां हमारे चोर आयेहैं सो भेजदीजिये नहीं
तो बड़ा अनर्थ होगा यह सुन कौन मत्तकाल है हम कुछ
नहीं समझते यह मंत्रीका वाक्य सुन वह दूत मत्तकाल
को बुलाय युद्ध करने को प्रवृत्त हुये मैं भी मत्तकालका सिर
काट उसकी सेना मार मंत्री समेत वीरकेतुके पास आया
राजाने भी अति प्रसन्न हो निज राज्य और कन्या वाम-
लोचना भी मेरे अर्पणकी यह मित्रवृत्त सुन राजवाहन अति
प्रसन्न हुआ और पुष्पोद्भव को भी सन्मुख देख आलिंगन
किया कहो तुमभी अपना वृत्त यह सुन पुष्पोद्भव भी निज
चरित कहने लगा—

इतिश्रीमत्पण्डितगणेशप्रसादसूनुनारामस्वरूपशर्म्मणाकृतायां
दशकुमारचरितेभाषायांतृतीयउच्छासःसमाप्तः।

देव! आपके जानेपर मैंभी भूमीपर फिरता २ सूर्यकी
गर्मीसे एक पेड़के नीचे बैठा वहां एक पर्वतसे पतित किसी
पुरुष को देख वीचहीमें पकड़ होशमें करके पूंछा आप क्यों
गिरे वह बोला सौम्य! मैं रत्नोद्भव हूँ कालयव द्वीपमें एक
वैश्यकी पुत्रीको विवाह पुरको आता हुआ जहाज टूटने से

किसी तरह किनारे आलगा और तपस्वी के वाक्य से षो-ड़शवर्ष विताय स्त्रीके वियोग से प्राणोंको छोड़ता हूँ उन को समझाय बैठाला फिर स्त्री का रुदन सुन वहां जाय एक वृद्धाके साथ जल्दी स्त्रीको पकड़ आप कौन हैं यह पूछा वृद्धा बोली सौम्य! यह कालगुप्तकी कन्या पतिके साथ पुष्पपुरको जाती हुई जहाज टूटने से किसी तरह निकलआई अबतक पतिको न पाय अग्निमें जलती है यह सुन माता पिताको प-हिचान प्रणाम किया और अपना वृत्तान्त भी कहा, माता पिताओं को किसी मुनिके आश्रममें विठाय मुनिके अंजन के प्रताप से भूमीसे असर्फियां निकाल व्योपारियों के समीप जाय बैल और थैले लाय वह धनभर चन्द्रपाल वैश्यसे मैत्री कर पिता माताको साथ उसके ही उज्जयनीको गया और आपके ढूँढनेकी वार्त्ता इसीचन्द्रपालके पिता बंधुपालसे कही वह मुझे ढूंढनेमें प्रवृतजान नहीं तुमसर्वभूमी भ्रमणमें समर्थ हो में शकुनआपके मित्रके आगमनकोविचारताहूं फिर उसने एक मास पीछे आपको तुमारामित्र मिलैगा यह सुन उसीके साथ बनमें जाय उसीकी पुत्री बालचन्द्रा दुःखित देख मैंने पूंछा वह कहनेलगी मुझसे एकान्तमें हे स्वामिन्! यहांका दर्पसार राजा पिताके वृद्धहोनेसे राज्यपाय फिर बुआके ल-ड़के चण्डवर्माको राज्य दे तपकरणार्थ गया है इसीका भ्रा-ता दारुवर्मा मुझको बलात्कार रमणकी इच्छा कररहा है सो मैं आपकी शरणहूँ यह वर सुन मैं बोला हेप्रिये! कोई यक्ष बालचन्द्रिका को चाहताहै यह स्वकुटुम्बियोंसे प्रसिद्ध करआजो यहभी नहीं निश्चयकरैगा तो मैं सखी बन तेरेसाथ

जाय वहींउसको मारडालूँगा। यहसुन वह चलीगई एकदिन बालचन्द्रिकाकोदारुवर्म्माने निजरतिमंदिरमेंबुलायामें सखी वेश धार प्रियाके साथ जाय रतिकी इच्छावाले उस दुष्टको मुष्टि और पैरों से मार वहांसे निकल, अरे नगरवासियो ! दारुवर्म्माको यक्ष मारडाले हैं यह वहांभीड़ होनेसे प्रियाको ले मैं घर आया कुछ दिनों पीछे बालचन्द्रिकाको विवाह और आपका दर्शन पाया यह सुन राजवाहन प्रसन्नहो स्त्री सहित सोमदत्तको पुष्पपुरभेज पुष्पोद्भवके साथ उज्जयनीमें प्रवेश कर बन्धुपाल से मैत्री कराई और घर ले आया ॥

इतिश्रीमत्पण्डितगणेशप्रसादसूनुनारायणस्वरूपशर्म्मणाकृतायां दशकुमारचरितभाषायांचतुर्थउच्छ्वासःसमाप्तः ।

कभी बसन्त के आरम्भ में मानसारकी नन्दनी अवन्तिसुन्दरी प्रियसखी पुष्पोद्भव प्रिया बालचन्द्रिकाके साथ रम्य उद्यानमें कामार्चनको आई वहीं पुष्पोद्भवके साथ राजबाहन ने देखी बालचन्द्रिका के इशारे से बुलाया हुआ यह राजकुमार भी वहां गया। और मैं शांबहूं यह पूर्व जन्मकी मेरी जाया जायावती है यह राजवाहन और अवन्तिसुंदरी जान परस्पर प्रेमहुआ वहकन्या माताके साथ निजगृहकोभी चली गई फिर राजबाहन बालचन्द्रिकाके मुखसे कन्याका अधिक प्रेम जान अब मैं क्याकरूँ? यह विचारतेही कोई विद्येश्वर नाम एन्द्र जालिक राजवाहनसे भेजाहुआ मानसार के घर जाय आशीर्वाद दे पिच्छिका घुमाय अद्भुतनाटक दिखाय राजासे बोला राजन् ! कोई सुन्दर नाटक देखिये किसी आपकी कन्याकेतुल्य स्त्री और एक चक्रवर्त्तीकुमार इन दोनों

का विवाह दिखाऊँ राजाकी आज्ञा पाय राजबाहन और पूर्व सङ्केतित अवन्ति सुन्दरी ही का सबके सम्मुख विवाह कर दिया यह नाटक देख मानसार प्रसन्नहो विद्येश्वर का बहु धनदे विदा किया राजवाहन भी कान्यान्तपुर में प्रवेश कर चतुर्दश भुवनों की कथा कह२ प्रिया को आनन्द कराता हुआ ॥

इतिश्रीमत्पण्डितगणशमसादसूनुनारामस्वरूपशर्म्मणाकृतायांदशकुमार चरितभाषायांपंचमःउच्छ्वासः ।

कभी सोते हुये राजवाहन का चरणयुगल रजतशृंखला से बँधादेख राजवाला विकलहो मुक्तकंठ रुदनकरने लगी तभी सकल कन्यांतःपुर भी व्याकुल होगया वहां मंत्रियों ने राजबाहनको देखा और चण्डवर्म्मासे जाय सबवृत्तकहा वह चण्डवर्माभी कोपसे आकरके यहपापाहै अवन्तिसुन्दरी इस दुष्ट पुष्पोद्भव के मित्र से अनुरक्त हुई देखो अभी इस को शूली देताहूँ यहकह बांधलिया राजबाहन भी पूर्वजन्म प्राप्त मुनिदत्त शापको यादकर प्रियाको समझाय रिपु के वश होगया महादेवी और मालवेन्द्र भी जामाताकी किसी तरह रक्षा करतेथे चण्डवर्मा तो तपकरते दर्पसारको सन्देशा भेज राजवाहनको पींजर में डालदिया और पुत्रीके न देने से चंपेश्वरसिंह वर्म्मासे युद्धभी करनेलगा फिर पकड़लिया प्रचण्डरणमें सिंहवर्म्मा को, चण्डवर्म्मा ने उसी रात अम्बालिका के साथ विवाहकर रहाथा वहीं कोई दर्पसारका दूतआय सन्देशा कहनेलगा मूढ़ ? क्या ऐसी भी दुष्टपर कृपा करनी चाहिये शीघ्र ही इस दुष्टका मारना मुझे सुना

यह सुन चंडवर्मा ने प्रातःकालही करि चरणदलन से यह राजबाहन मारने योग्य है ऐसे किसी दूतसे कहा उसी समय राजवाहन के चरण युगल से यह रजत शृंखला छुटे कोई अप्सरा हो कुमारको प्रदक्षिणा कर कहने लगी देव ! मैंहूं शशाङ्क रश्मि संभव सुतर मंजरी नाम सुरसुन्दरी मार्कण्डेय के शापसे इस अवस्था को प्राप्त हुई फिर वह प्रसन्न कियेहुये मुझे आपके पाद पद्मकी मास द्वयमात्र शृंखला बनाते हुए आप प्रसन्न हो क्या मैं आपका उपकारकर उद्धार होऊं यह वात अवन्ति सुन्दरीको कह दे राजवाहन यह कहकर उस सुरत मंजरी को विदा करताहुआ उसी अवसर में किसी चोर वीरने चंडवर्माको मारडाला यह शब्द कर्णगोचर हुआ सुनकर राजवाहन किस महापुरुष ने यह परुषकर्म किया वह मेरे पास निर्भय हो आवै यह बोला क्या यह अपहार वर्माही है यह जान आलिंगन कर मिले तभी धनमित्र आय—अपहारवर्मा,अर्थपाल, प्रमति, मित्रगुप्त, मंत्रगुप्त, विश्रुत, प्रहारवर्मा, कामपाल, सिंहवर्मा, इनसबकोलाय प्रणामकर बैठा राजवाहन भी सिंहवर्मा की सहाय के अर्थ आये सबसे यथा योग्य मिल परमहर्षको प्राप्त हुआ, अपना और सोमदत्त पुष्पोद्भव का भी चरित वर्णन कर मित्रों का वृत्तान्त यथाक्रम सुननेको प्रारम्भ करता हुआ प्रथम तो अपहारवर्मा अपने वृत्तान्त को सुनाने लगा—

इतिश्रीमत्पण्डितगणेशप्रसादसूनुनारामस्वरूपशर्म्मणाकृतायां दशकुमारचरितभाषायांद्विजोपकृतिर्नामषष्ठमोच्छ्वासः ।

उत्तर खण्डम् ।

"अपहार वर्म्मचरितम्"

देव ! मैंभी आपको ढूँढता २ चंपापुरी के निकट मरीचि मुनिके आश्रम में जाय किसी दुःखित मुनिको देख, क्या वह मुनिहैं यह मैंने कहा तो वह बोलाकि एक मुनि इसी आश्रममें था एक समय काम मंजरी मातृ समूह के साथ आय मुनिके चरणोंमें गिरी आप कौन हो यह मुनिसे पूंछी हुई उसकी मा बोली मुने ! मैं जातिकी वेश्या हूँ और यह मेरी पुत्री है हमारी आज्ञा न मान रूपवान् ब्राह्मण कुमार से रमण करने लगी विनाही धन, हमने वहुवार कहा यह क्रोधित हो वन में चली आई यही हमारी आजीविका जीवन मूल है यह सुन मुनि बोले भद्रे ! यह वनवास बड़ा दुख दायक है मुनि वचन सुन काम मंजरी ने कहा जो आप मुझको चरण सेवामें न रखोगे तो मैं अब ही प्राण त्यागदूंगी यह मुनि सुन आप सब जाओ थोड़ेही दिनोंमें तप क्लेश दिखाय समझाय भेजदूंगा फिर वह सब यहां से चलींगईं तब उस वेश्या ने नृत्य गीतादिकों से मुनिका मन रञ्जनकर उसको राज सभामें लेगई वहां कोई स्त्री उठ बोली राजन् ! आजसे लेकर मैं इस की दासी हुई फिर राजासे सत्कार की हुई काम मंजरी आप जाइये ऐसा हाथ जोड़ मुनिसे बोली मुनिभी उस पणबंधको देख

चकित हो चलेआये सौम्य वही मैं मुनि हूँ इसीसे मैं दुःखित हूँ मैंभी वहीं रात्रि विताय प्रातःकाल कुछ दूरजाय एक क्षपणक को दुःखित देख क्यों आप मलीन हैं यह पूंछा यह सुनक्षपणक मुझ से बोला सौम्य ! इसी चंपा में निधिपालित का पुत्र वसुपालित कुरूपसे विरूप कभी नाम था यही कोई सुन्दरक यथार्थ नाम वैश्यथा और धूर्त्तों ने उनदोनों का वैर कराय जिसको काममंजरी चांहे वही सुन्दर है यहकह मुझी को काममंजरी दिलाय सब धनहर लिया वो मैंहीं हूं सो मेरा यह रुदन का कारण है यह सुन मैं यत्न करताहूं वह वेश्या आपही आपको सब धन देजायगी यहकह उसी देशकी धूर्त्तसमाज में जाय किसी द्यूतानभिज्ञ पुरुषका हास्यकरा तो वहांसे एकपुरुष उठ आ तेरे चतुरके साथ हम खेलेंगे यह कहा मैंभी उसकेसाथ जुआ खेल १६०० सौल्हेसौ दीनार (अशर्फी) जीत आधी द्यूताध्यक्षादिकोंको दे चलाआया फिर द्यूत मित्र त्रिमर्दक से सब उसदेशकाहाल पूंछ एकधनीके चोरीकर रात्रि में एक कन्या को देख तू कौनहै यह पूंछा वह कांपती मुझसे बोली आर्य्य ! मैं कुबेरदत्तकी कन्याहूं मेरेमाता पिताने धनमित्रनाम जो उदारकहै उसकेसाथ सगाईकरदीथीउसके निर्धनहोनेसेकिसी अर्थपतिके साथ कल मेरा विवाह निश्चितहै यह सुन मैं धनमित्रही के पास जाती हूं मैं भी उसी के साथ चला तभी कोई मसाल लिये राजदूत देख मैं उससे बोला प्रिये ! यह इन से कहदेना कि यह मेरा पति है सर्पने इसको डसालियाहै मैं यहां सोयाजाताहूं वैसाही उसनेकरा मुझे वह दूत मराहुआजान

वहांसे चलेगये फिर मैं उस कन्याको ले उदारकके समीप पहुंच सब वृत्त कह मैत्री करी और वह मेरे कहने से चंपा में आया अर्थपति और कुबेरदत्तके चोरीकरी प्रातःकाल कुबेरदत्तको समझाय मासांत में उदारकके विवाहका निश्चय कराय एक चर्मरत्न भस्त्रिका बनाय धनमित्रसे कहनेलगा मित्र ! तू राजासे जाके कह राजन् ! कुबेरदत्त कुलपालिका निज कन्याको मेरे निर्धन होनेसे अर्थपतिको देगा मैं और आप मुझ वसुमित्र के पुत्र धन मित्रको जानतेहीहो मैं बनमें जाय शस्त्रसे शिर काटने लगा तभी एक मुनिने मुझे देख दयाकर यह चर्मरत्न भस्त्रिका दी और कहा कि यह वैश्य और वेश्याको ही पूजन करीहुई जो जिसका कपट से लियाहो वह उसको देदे और सब घरका धन जो प्रदान करे उसको यह प्रतिदिन लक्ष मुद्रा देगी सो मैं आपके पास लाया हूं यह सुन राजा प्रसन्नहो तुझीको देदेगा फिर तू कहिये कोई इसको चुरावै नहीं यह भी मानलेगा फिर हम रात्रिमें चोरी कर दिन में पूजाकर सबको वही धन दिखा देंगे यह सुन कुबेरदत्त भी निज कन्याको तुझे देही देगा वैसेही उसने किया, फिर मैं विमर्दक मित्रको अर्थपतिका अनुचर बनाय धनमित्र अर्थपतिका बैर कराय धनमित्रको कुलपालिका दिलाय तभी काममञ्जरी की भगिनी रागमञ्जरीको देख बिनाही धन प्राति दिन रमणकरनेलगा फिरमैंने दूती धर्म रक्षिताकेद्वारा काममंजरी और माता मागध सेना से कहा जो तू मुझे राग मंजरी को दे दे तो मैं तुझे यह धर्ममित्रकी चर्मरत्न भस्त्रिका चुराकर देदूं उन्होंनेअङ्गीकारकिया औरइन्होंनेवैसाहीकियाफिरमेरामित्र

विमर्दक मेरेही कहनेसे धनमित्रसे युद्धकरनेको उद्यतहुआ और कहाअरे! तू चर्मरत्निकाके गर्वसे कुवेरदत्तको लुभाय पराईस्त्री कीइच्छा करताहै इसी राततेरी यह चुराय गर्वनाश करूंगा, धन मित्रने यह वृत्त राजासे कहदिया राजाने भी अर्थ पति को वुलाय कहा कोई आपका परम मित्र विमर्दक है हाँ महाराज परममित्र है अच्छा उसको यहांलाओ यह सुन उसको सवजगह ढूंढा न मिला कहीं तब आय अपने आपही चर्मरत्नकी चोरी स्वीकार कर बंधन में बँधगया हेराजवाहन! वो विमर्दक तो आपके ढूंढनेको उज्जयनी गया था वह इसे क्योंकर मिलता एकदिन काममंजरी चर्मरत्न दुंहनेकी इच्छा से उसीसमय क्षपणकको धनदे और अपना धन लुटाने लगी तभी धन मित्र ने मेरे कहने से राजाके पास जाय कहा मैं अनुमान करता हूं कि–चर्मरत्न काममंजरी के पास हैं न तो यह क्यों अपना धन लुटाती यह सुन राजाने काममंजरी को बुलाय चलतीदफे मैंने कहा जो तू मेरा नाम लेगी तो मुझे राजा मरवाडालैगा और फिर तेरी भैन भी रागमंजरी मेरेही वियोगमें प्राण छोड़ देगी इस से तू मुझे, यह चर्म भस्त्रिका अर्थ पतिने दी है यह जाकर कहिये राजा से बार २ पूंछी हुई काममंजरी अर्थ पतिने हमै दी यही कहा यह सुन राजा ने अर्थपतिको प्राणदण्ड की आज्ञा दी तभी धनमित्र बोला राजन्! प्राणदंड देना इस कसूरपर धर्मशास्त्रसे विरुद्ध है सो आप इसको देश निकाला देदीजिये वैसेही राजा ने किया फिर यथेच्छ वहां से हमने धन चुराया एकदिन दैव दुर्विपाक से मैं मदिरा पीकर शृगालिका के साथ उन्मत्त हो निकला

तभी राज दूतों ने मुझे चोर जान पकड़ा फिर मुझे होश भी हुआ मेरे पकड़ने से रागमञ्जरी धनमित्र भी पकड़ेहीजांयगे यह विचार शृगालिकाको झिड़ककर कहा मेराशत्रु धनगर्व से धन मित्र रागमंजरी को चाहता है यह सुन शृगालिका राजदूतों से कहा मेरा धन यह चुरालायाहै । सो मैं इससे पूंछ देखूं वह मेरे पास आई मैंनेभी हौले २ उसको उपाय बताया फिर दूतोंने मुझे चोर जान कैदमें डालदिया फिर धनमित्रने राजा से सब वृत्त कहा राजाने भी कान्तक कोतवाल को भेजा फिर मुझसे कोतवाल ने कहा तू इसकी चर्म रत्नभस्त्रिका और रागमंजरीका आभूषण देदे नहीं तो तुझे बड़ी दुखदाई सजा मिलैगी फिर मैंने रागमंजरी का आभूषण तो शृगालिकाको बतादिया परन्तु अजिन रत्न न दिया फिर एकदिन शृगालिका मेरे पास कारागार में आय बोली कि हे अपहार वर्म्मन ! मैंने यह उपाय किया है दूती मांगलिका के द्वारा रागमंजरी और राजपुत्री अंबालिका की मैत्री करदी है और एक दिन उस राजपुत्री का यथावत् भी कर्णपूरथा तौभी मैंने यह गिरा इस बहाने से समालते २ नीचेगेर दिया कर्णपूरका के गिरने से नीचे चुगते कबूतरभी उड़गये यह देखराजपुत्री हँसी उसीसमय कान्तकभी नकशाखींचनें वहां आयाथा और यह राजकन्या मुझेही देखहँसी है यह उसने मनमें जाना काम वशहोकर घरको चलागया मैंभी सखीराजमंजरी के वास्ते राजपुत्री सेभेजी हुइ पिटारी कोले कान्तक के घर जाय कहने लगी यह आपको राजपुत्रीने दीहै और कहा आपशीघ्रही सुरङ्ग

खुदवाय वहां चलिये यह सुन वड़ा प्रसन्न हो कौन सुरङ्ग खोदसक्ता है यह पूंछा फिर मैंने कहा जोधन मित्र के अजिनरत्न का चोर है वही खोदसक्ताहै आपयह उससे कहो मैं अवश्य छुटादूंगा फिर कार्य्य होजाने पर कैद में डालदीजिये सो मुझे कान्तकने भेजा है वहभी द्वारेही खडा है मैं यह शृगालिका का उपाय देख वड़ा प्रसन्न हुआ और कान्तक के कहने से वहां सुरंग खोदी जबवह सुरंगमें घुस मुझे पकडने लगा तभी उसीके खड्गसे शिर उसका काटसुरंगके द्वारा राजपुत्री को देख कामवशहो किसी तरह वहांसे निकल कारागार में आय किसी सिंहघोष को कान्तकका वृत्त सुनाय राग मंजरी के घर जायउसे समझाय उदारक को साथले मरीचि मुनिके आश्रम में गया।सिंह घोषभी सब वृत्तान्त सुनाय प्रसन्न हुये राजासे कान्तकही की पदवी पाय मुझे अंबालिकाके पास लेगया उसी सिंह वर्म्मा को चंड वर्म्मा जीत अंबालिका को छीन विवाहको उद्यतहै मैं भी विवाहगृहमें जाय उसको मार अपनी प्राणप्रिया अंबालिका को लाया तभी आपके दर्शनभी मुझे हुये यह सुन राज बाहन प्रसन्नहो आपभी अपना वृत्तकहो यह उपहारवर्म्मासे बोला उपहारवर्म्माने भी अपना चरित कहना प्रारंभ किया।

इति श्रीमत्पंडितगणेशप्रसादसूनुनारामस्वरूपशर्म्मणाकृतायां
दशकुमारचरित भाषायां द्वितीय उच्छ्वासःसमाप्तः ॥

"उपहारवर्म्म चरितं प्रारभ्यते"

देव ! मैं भी आपको ढूंढ़ता२ विदेह देशके निकट जाय किसी रोतीहुई वृद्धतापसीको देख पूंछा वह कहनेलगी आयु।

ष्मन् ! एकसमय प्रियंवदा निज पति प्रहारवर्म्माके साथ व-
सुमतीसे मिलनेको पुष्पपुर में गई उसी समय मानससार के
युद्ध में राजहंसके साथ पराजयहो घर आताहुआ प्रहारव
र्म्मा किरातोंसे लूटागया फिर मैं उसके कनिष्ठ पुत्रको लिये
बनमें सिंहकोदेख गिरपड़ी न जाने वो बालक कहांगया तभी
एक गोपालने मुझको अन्वेषण किया मेरी पुत्रीभी किसी युवा
के साथ आय बड़े कुमारका खोजाना किसी पुरुषका मेरे साथ
रमण करतेहुये का सिर प्रहारवर्म्मा के मंत्रीने काटा यह पुत्री
का वाक्यसुन उसी युवाके साथ पुत्रीका विवाहभी करदिया
फिर यही सबवृत्त प्रहारवर्म्मासेकहा फिर भ्राता संहारवर्म्मा
के पुत्र विकट वर्म्मादिकोंने राज्य छीन प्रहारवर्म्मा प्रियंवदा
को बांधदिया मैं यह दुख देख प्राण त्यागन करती हूं मैं भी रो-
कर बोला जो तेरे हाथ से छूटाहूं सो वही मैं हूं यह सुन वृद्धा
वह मुझे आलिंगनकर वहीं रात्रिविताई प्रात होतेही उसकी
पुष्करिका पुत्री वहींआई कुछ अन्तःपुरके प्रवेशकीयुक्ती बताय
यह सुन पुष्करिका बोली कुमार ! कलिन्दवर्मा की पुत्री कल्प
सुन्दरी कुरूपी पतिसे प्रतिकूलहै यह सुन निज चित्रलिख पु-
ष्करिकाके द्वारा कल्प सुन्दरी को दिखाया मुझको इस कुमा
रका अवश्य दर्शन करा यह कह कुछ गुप्त कथा सुनाने लगी
सखिपुष्करिके! मेरेपिता और प्रहारवर्म्माकी बड़ीमैत्रीथी मेरी
मातामानवती और प्रियंवदाकीभी, दोनों एकसाथ गर्भहोने
से पुत्रवती को अपनी पुत्रीदेंगे यह पणबन्ध हुआ प्रियंवदा
के पुत्र नष्ट होनेसे मेरी माताने मुझे बिकटवर्म्माको बिवाह
दिया इससे आज वा कल इसयुवासे अवश्य मुझे मिला यह

सबवृत्तसुन पुष्करिकाने मुझसे कहा मैं कैसे परस्त्री गमनकरूं यह बिचार करता २ सोगया तभी शिवने मुझसे स्वप्न में यह कहा हे उपहार बर्म्मन्! मत संशयकर तू मेरा अंश है यह कल्प सुन्दरी गंगाहै गणेशके शापसे बिकटवर्म्मा वड़े मेरे अंशसे भोगकर फिर तेरेही साथ रमण करैगी यह स्वप्न देख संकेत स्थानमें रमणकर अधिक उसकी प्रीतिका यह उपायरचा कहाभी प्रिये! तू बिकटवर्म्मा को मेरी तस्वीर दिखाय कह मुझे यह चित्रपट एकतापसी ने दिया है और कहाभीहै जो इसे मंत्र पूर्वक हवन करैगी तो यही मूर्त्तितेरे पतिकी होजायगी वैसेही उसने किया वहभी मूढमति कथनानुसार हवन करनेलगा मैंभी स्त्री का वेशधर चौकपर वैठ वताओ आपकी कौनसी गुप्तवार्त्ता है आपका अवरूप बदलता है यह सुन निज प्रिया मुझेजान बोला प्रिये! प्रहार वर्म्मा को विष से मरवाना और उसके मित्रशतहलीको अनन्तशीरसे मरवाना. थोडेही मूल्य से एकरत्न लेना पुड़देश के जयार्थ विशाल वर्म्मा को भेजना यह सुन इतनीही तेरी आयुहै यह कह खड्ग से दोटुकड़े कर हवन में डाल, प्रियाके साथ रणवास में जाय रात बिताय प्रातःकाल होतेही सभामें जाय मंत्रियों से कहा मेरी मूर्त्तिही नहीं किन्तु स्वभावभी बदलगया है इससे मेरे चचाको भी कारागार से छोडदो और रत्नभी यथावत् मूल्य से लेलो शतहलीकोभी अनन्तशीर से चढाई न करावो वहां दुर्भिक्ष है इससे बिशालवर्म्मा भ्रातासेभी कहदो वहभी चढाई न करै मंत्रीभी मुझे बिकटबर्म्माही जान यथावत् कार्य करने लगे, फिर पिता के पास जाय सब वृत्त सुनाय पिताही

को राज्य देदिया फिर सिंहवर्म्माके पत्र से मैं चम्पा में आया और आपका दर्शन पाया यह सुन राजवाहन हर्षित हो आप भी अपना वृत्त कहो यह अर्थपाल से कहा वह भी प्रणामकर निज कथा कहने लगा ॥

इतिश्रीमत्पण्डितगणेशप्रसादसूनुनारामस्वरूपशर्मणाकृतायां दशकुमारचरितभाषायांतृतीयउच्छ्वासःसमाप्तः ।

"अर्थपाल चरितम्"

मैं भी देव ! आपको ढूंढ़ता २ काशीपुरी में मणिकर्णिका के निकट जाय शिव की प्रदक्षिणाकर किसी दुःखी पुरुषको देख पूंछा वह मुझ से कहने लगा सौम्य ! मेरा नाम पूर्णभद्र है यहाँ मैं किसी दिन चोरी करते पकड़ागया और मंत्री कामपालकी आज्ञा से मेरे ऊपर मत्तगज छोंड़ा मैंने भी दौड़ ऐसा प्रहारा कि–हाथी चींघताहुआ भागा यह मेरा वीरत्व देख प्रसन्न हो कामपालने कहा सौम्य ! यह आप चोरी करनी छोंडदो वैसेही मैंने किया फिर वह अपना भी वृत्त मुझे सुनाने लगा मित्र ! राजहंस के मंत्री धर्मपालका मैं पुत्र हूं इसी काशीमें आय राजा चण्डसिंह की कान्तिमती कन्या के साथ गुप्तही रमण किया एक पुत्र भी हुआ उसको दूतीकेहाथ श्मशानमें फिकवानेको भेजा वहमार्गमें राजदूतों से पकड़ीगई मेरा वृत्त उससे सुना,मुझे राजाने पकड़ बँधवाय श्मशान में लेजाय शिर काटनेकी आज्ञा दी उसी तलवार से दूतों को मार भाग एक वन में गया और एक स्त्री को भी देखा वह कहने लगी प्रिय ! मैं तारावली यक्षणी हूं श्मशान में एक कुमार को देख कुवेर के पास गई उसने मुझ से कहा

कामपाल पूर्व जन्मका तेरा पति कान्तिमती सपत्नी है यह तेरा पुत्र है यह सुन कुमार को वसुमती के अर्पणकर आपकी चरण सेवामें आई हूँ फिर उसीके बलसे सोतेहुये राजाके पासजाय खड्ग उठाय यहमें तुह्मारा जामाता हूं यह कहनेल-गा राजाने मेरे भयसे कन्या और राज्यभी मेरे अर्पण किया मैंभी यक्षणी और कान्तिमती के साथ यथेच्छ रमणकरता था चंडसिंह तत्पुत्र चंडघोषके मरनेपर पांच वर्षके सिंहघोष कोही मैंने राज्यपर बिठादिया यह यौवनोन्मत्त हो आपकी भगिनी को इसने बलात्कार छीना यह सुन उसी कामपाल के मरवाने को यत्न करता था तभी वहांसे यक्षणीका जाना सुन कामपाल के नेत्र निकालने की आज्ञादी है उसीके शो-कमेंभी प्राण त्यागन करता हूं यह पिताका वृत्त सुन वहींमें यक्षणी द्वारा वसुमती का पालाहूं यह कह कुछ रोकर एक सर्पको देख मैंने पकड़ लिया, मैं पूर्ण भद्रसे बोला हे तात ! मैं इसी सर्पको पिताके ऊपर छोड़ विषस्तंभन करदूंगा यह बात मेरे मातासे आप जाकर कहदीजिये उसने वैसेही किया उसी समय बंधे मेरे पिताको लाय इस अपराधसे मं-त्रीकी आंखें निकाली जांयहैं यह तीन दफे ढंडोरा पिटवा आ, तभी मैंने वही सर्प छोड़ा वह पिताको और मातंगको भी काट भागगया मैंनेभी विषस्तंभन करदिया पिताको मरा जान मेरी माता राजासे सती होनेकी आज्ञाले पिताको घर लेआई मैंनेभी पिताका वहीं आय विष उतार दिया फिर माता, पितासे सब वृत्त कह आलिंगन कर मिला फिर पिताकी आज्ञानुसार सुरङ्ग खोदी और बीचही में एक ग-

न्दिर देख वहां जाय स्त्री समूहको देख अपना नाम कह तुम कौन हो यह पूछा तो एकवृद्धा बोली हे भत्तदारक ! चंडघोष के मरने पर उसकी स्त्री आचारवती भी सती होगई उसी की यह मणिकर्णिका पुत्री है फिर आप के नाना सिंहने मरते समय कान्तिमतीके वृत्तसे डेर मुझे बुलाय कहा हे ऋद्धिमतिके ! तू इसको इस स्थान में लेजा बड़ी होनेपर दर्पसार के साथ विवाह करदीजिये हमैं यहां बारह१२ वर्ष रहते२ बीतगये और कांतिमती नेभी इस कन्याको द्यूतमें जीतलिया था सो आप इसको ग्रहण कीजिये यह सुन राज भवनमें जाय राजाको पकड़लाया और पिताकी आज्ञानुसार इस मणिकर्णिका को विवाहा फिर सिंह वर्म्माकी पत्रिकासे यहांआया और आपका दर्शन पाया यहसुन राजवाहन परमानंदहो सिंहघोषको छुटाय अपना वृत्तकहो यह प्रमतिसे कहा वह भी निज चारित कर जोड़ सुनाने लगा ॥

इतिश्रीमत्पंडित गणेशप्रसादसूनुना रामस्वरूपशर्म्मणा कृतायां दशकुमारचारित भाषायां चतुर्थउच्छ्वासःसमाप्तः ॥

"प्रमति चरितम्"

देव ! मैंभी ढूंढता२ संध्या को वृक्षके नीचे बैठे इस बन देवताकी मैं शरण हूं यह कह सोगया कुछदेरबाद करवट लेनेसे एक राजमंदिर सुंदर शय्या वहीं राजकन्याको भी देख मोहितहो कुछ नींद न आने से वही वन वही भू शय्या देख मैं जन्मभर ही भूमिमें सोऊंगा यह विचारते २ ही एक सुर सुन्दरी आय मुझसे कहनेलगी वत्स ! मैं कामपाल की स्त्री यक्षणी हूं पतिके कहने से किसी राक्षससे एक वर्ष के शापको

पाय स्रावस्तीके उत्सवको जातीहुईतुम्हैं निज अर्थपालकापुत्र जान कन्या के पास सुलाय आतीबार भगवती से शाप दूर होनेसे तुमें यहां लिवायलाई आप उसकन्याका यत्नकर विवाह कीजिये में अब पतिके पाद मूलमें जातीहूं यह कह वह चलीगई में काम संतप्त हो स्रावस्ती के निकट कुकुट युद्ध देख वृद्ध विट मार्गहीमें मैत्रीकर एक वगीचे में जाय चित्र पट लिये स्त्रीको देख उससे चित्र पटले उसी कन्याको पहिचान तद्द्वारा अपने में उसकी अभिलाषा जान उसी वृद्ध विटके निकट आ सव वृत्त कह वह अपनी मुझे पुत्री वनाय राजाके पास जाय यह मेरी पुत्रीहै सो आपही जबतक मेरा जामाता आवै तबतक पालिये यह कह वृद्ध चला आया मुझे भी राजाने कन्याही जान निज पुत्री नवमालिकाकेही पास रक्खा मैंभी वहुत दिनोंतक उसके साथ रमण करता २ एक दिन स्नानके वहाने से वृद्ध वेश्यके पास जाय वही पुरुष वेषधर वह मुझे साथले यह मेरा जामाता आगया यह राजासे जाकहा यह सुन राजा मंत्रियोंके साथ आप कहने लगा सौम्य ! जो चाहैं उसके वदलेमें लो परन्तु पुत्री तो आपकी कहीं खोगई यह सुन इसी वृद्धकी चिता वनाय पुत्री के विना में भस्म होता हूं यह साहस देख नवमालिकाही विवाहदी मुझे, फिर चंपेश्वरकी पत्रिका देख यहां आया और आपको देख परमानन्द पाया यह सुन राजवाहन प्रमतिकी प्रशंसाकर मित्रगुप्तको आज्ञादी वह भी निज वृत्त कहने लगा ॥

इतिश्रीमत्पंडित गणेशप्रसादसूनुना रामस्वरूपशर्मणा कृतायां
दशकुमारचरित भाषायां पञ्चमउच्छ्वासःसमाप्तः

"मित्रगुप्त चरितम्"

देव ! मैंभी ढूंढ़ता हुआ दामलिप्त देशके समीप उत्सव से अलग दुःखित, वीणा करगहे, क्यों आप दुःखित हैं यह पूंछा हुआ वह कहने लगा सौम्य ! कोश्यदास मेरा नाम है इस देशका राजा तुंगधन्वा देवीकी आराधना कर भीम धन्वा पुत्र और कन्दुकावती कन्या यह दो मेदनी स्त्री से उत्पन्न हुई उसी राजकुमार ने चंद्रसेना नाम मेरी स्त्री बलात्कार ग्रहणकी है यही मुझे दुःख है तभी वह चंद्रसेना भी आय मुझे और कोश्यदास को उत्सव में लिवाय गई वह कन्दुक खेलती हुई कन्या मुझे देख मोहित हुई फिर घरआय भोजन पाय मुझेखिलाय मेरेही सन्मुख कोश्यदास से कहने लगी प्राणनाथ ! हमारा आज कार्य सिद्ध होगया जो राजपुत्री इन्ही मित्रगुप्त को चाहती है यह देवीका वरदानही है जो इसको विवाह करैगा उसीके वश यह भीमधन्वा फिर हमैंभी यह नहीं ग्रहण करसकेगा तभी यह भगिनी इसको चाहती है तो मैंभी इसीके वशीभूत हूंगा यह जान मुझे बंधवाय समुद्र मे डलवादिया फिरमुझे दया से एक रामत्राण नामनौका पतिने निकलवा लिया तभी एक चोर ने हमारी नौका वालों से युद्ध कर पराजय किया मैंभी उनसे निज बंधन खुलवाय उसी चोरको वहां से उछलकर पकड वहीं यह भीमधन्वा है यह जान नौका वालों ने मुझे प्रशंसा कर मेरे ही बंधन से उस को बांध लिया फिर वायु वेगसे वह नौका एक पर्वत के निटक जा पहुंची वहां से उतर एक रमणीय सरोबर को देखते २ हीं

कोई ब्रह्मराक्षस मैंने देखा वता मेरे प्रश्न, नहीं अभी खा लूंगा यह कहाभी यह उसका वाक्य सुन कहिये कौन २ प्रश्न आपकेहैं यह मेरा वचन सुन वह राक्षस यह कहने लगा ॥

(प्रश्न)किंक्रूरं(उत्तर)स्त्री हृदयं(प्र.)किंगृहिणः(उ,)प्रिय हितायदारगुणाः (प्र.) कः कामः(उ.)संकल्पः(प्र.)किंदुष्कर साधनम्(उ०)प्रज्ञा ॥ १ ॥

प्रथम प्रश्नोत्तर कादृष्टान्त—घूमनी, गोमनी निम्ब वती नितम्बवती, इन् चार स्त्रियों का इसमें सम्वाद है एक समय त्रिगर्त्तक नाम जनपद में दुर्भिक्ष होनेसे उसदेश निवासी धनक, धान्यक, धन्यक सब धनपशु पुत्रोंको खाय मध्यमा ज्येष्ठा स्त्रियोंको भी खाय तीसरी स्त्रीके खाने को उद्यत देख धन्यक स्त्री को साथ ले किसी फल फूलवाले वनकोजाय वहीं एक विकल पुरुष को देख यह उसे भी साथ ले कुटी बनाय वहां रहा और धन्यकने तेल मलर उस विकल को आराम और पुष्ट किया किसी दिन यही गोमनी पानी भरते निज पति को कूपमें गेर विकलके साथ बलात्कारसे रमण किया, और किसी देशमें जाय अपने को पतिव्रता बताय वहीं रही धन्यक भी किसी दयालु पुरुषसे निकालाहुआ वहीं आया, यह उसको देख, यही मेरे इस पति के विकल करनेवाला है यह राजासे कह धन्यक को शूली की आज्ञा दिलाई तभी राजासे पूंछाहुआ वह विकल रोकरबोला राजन्! यह मेरा परमहितैषीहै इसी पापनीने इसको कूपमें पतन किया मुझसे बलात्कार रमणभी किया, यह राजा सुन नाक कान काट इस घूमनी धन्यकको छोड़दिया ॥

द्वितीयप्रश्नोत्तर—किसी काञ्ची नगरी का शक्तिकुमार वैश्य गुणवाली स्त्री मिलै तो विवाह करूं यह विचार किसी देश में जाय सेरभर जौ ले एक कन्याको दिये उस कन्याने बड़ाही स्वाद भोजन बनाय संतुष्टकरा फिर वही शक्तिकुमार वैश्य उसको विवाह घरलाय एक वेश्याको भी लाया परन्तु उस कन्याका कुछभी मन विकार न देख पतिव्रता जान उस के ऊपर प्रसन्नहो सुखपाया ॥

तृतीय प्रश्नोत्तर दृष्टांत—एक वल्लभी नगरीमें बलभद्र नाम किसी वैश्यने गृहगुप्त नाम नाविक पतिकी कन्या रत्नावली के साथ पाणिग्रहण कर कुरूपा अपनी स्त्री को प्रतिकूल रहा रत्नावली दुःखित हो किसी संन्यासिनीको देख बोली हेमातः! तुमें कनकवती अभिलाषा करतीहै यह बात मेरे पतिसे कहदे उसने वैसेहीकहा बलभद्रभी वहांगया रत्नावली भी उसी के घर जाय शृंगारकर बैठगई बलभद्रभी उसको कनकवतीजान देशांतर को लेगया और खेटकपुर जाय बहुत धन संचय किया यह बलभद्र निधिपतिकी स्त्री कनकवती को भुलायलायाहै यह राजाने जान इसको दंडकी आज्ञा दी, तभी बलभद्रको दुःखी जान मैं वही रत्नावलीहूं यह सुन बलभद्रने राजासे कहा आप हमारे नगरवासियों से पूंछ देखिये यह वही मेरी रत्नावलीहै नहीं कनकवती, राजा ने वैसेही किया इसको भी छोड़दिया फिर यही बलभद्र अपनी स्त्री को सरूपा जान मैंने वृथाही इसको कुरूपा बताया यह विचार यथा सुख घरजाय परमानन्दको प्राप्तहुआ ॥

चतुर्थ प्रश्नोत्तर दृष्टांत—मथुरापुरीमें कोई रसिक वैश्य कि-

सीके पास चित्र पट में एक कामिनी को देख कामवश हो यह कौन है इस प्रकार चित्रपटवालेसे कहा वह बोला मित्र! यह उज्जयनीके अनन्तकीर्त्तिकी नितम्बवतीहै यहसुन वहांजाय श्मशानका ठेका लिया और एक संन्यासिनी दूतीको भेजकहा हे नितम्बवती! मैंने सुनाहै तेरापति क्षयरोगग्रस्तहै सो मैं एक पुरुष को लाऊंगी तू उसका पैर पकड़ हास्यसे पतिको मारदीजिये, वह निरोग होजायगा उसने वैसेही मानलिया वह वैश्य रात्रिमें जाय पैर पकड़तेही पायजेव निकाल छुरीसे पैरको चिह्नितकर भागगया, फिर वही धूर्त्त अनन्त कीर्त्ति उसके पतिके पास जाय पैंजेव बेचनेलगा, यह तो मेरी स्त्री की पायजेवहै यहजान नगरबासियोंको इकट्ठाकर बार२ पूंछा यह सुन वैश्य ने कहा मैं श्मशानमें बैठाहीथा वहीं एक स्त्री जले मुरदेको निकालतीहुई देख मैंने उसकी यहपायजेव छीन और पैरमें छुरी भी मारी फिर वह चलीगई अनन्तकीर्त्ति यह सुन शांकिनी अपनी स्त्रीको जान निकाला वही श्मशानमें प्राणत्यगार्थ गई तभी यह वैश्य उस नितम्बवतीको सब वृत्तसुनाय अपने घर मथुरा नगरीको लेआया यह प्रश्नोत्तरहै॥

हेराजबाहन! ब्रह्मराक्षसने मेराबड़ाही सन्मानकिया तभी आकाशमें ब्रह्मराक्षससे गृहीत एक स्त्रीको देखा यह ब्रह्मराक्षस दौड़ उससे स्त्री छीन युद्धकर दोनों मरगये मैं भी वही कनकवतीहूं यह जान आपही के शोकसे संतप्त मुझको इस ब्रह्मराक्षस ने बनमेंपकड़लिया यहसुन राजकन्याकोभी उसीनौका में बिठाय फिर दामलिप्त नगरमें आय प्राणत्यागनेमें उद्यत तुंगधन्वा को दिखाय कन्दुकवती को विवाह और उसी को-

शदास तथा उसकी स्त्री चंद्रसेनादि को लाय फिर सिंहव र्म्मा की पत्रिका पाय आपका दर्शन किया यह सुन राजवाह न ने कुछ हँस मंत्रगुप्त को आज्ञा चरित सुनानेकी दी ॥

इतिश्रीमत्पंडित गणेशप्रसादसूनुना रामस्वरूपशर्म्मणा कृतायां दशकुमारचरित भाषायां षष्ठ उच्छ्वासःसमाप्तः ॥

मंत्र गुप्त चरितम्

देव ! मैंभी आप को ढूंढता २ कलिंग देश को गया और श्मशान के निकट किसी वृक्ष के नीचे सोय भी गया आधी रात बीतने पर यह मैंने सुना देखो वह दुष्ट तपस्वी मुझे भेजता है कोई इसका विघ्न करने को समर्थ यह सुन वहीं में जाय हाड्डियों की माला गले मे डाले चिता में हवन करते किसी जटा धारी को देख और सामने किसी किंकर को भी देखा मैं उस दुष्ट जटाधारी को इसी कालिंग देश के राजा की, किंकरसे लाईहुई कनकवतीकन्या का शिर काटते देख उसी तलवार से इसी जटाधारी का मुझ से शिरकाटा देख वह किंकर प्रसन्नहो. मुझ से बोला सौम्य ! आज आपने मुझे इस दुष्ट से छुटाया अब मुझ किंकरको कोई कार्य बताइये सो मैं करूं यह सुन मैंने उस से कहा मित्र ! इसी कन्या को यथा स्थान पहुंचादे तभी वह कन्या भी मुझसे बोली प्राणरक्षक ! इस मुझे काल से बचाय क्यों शोकसागर में डुबातेहो मैं आपही की सेवा करूंगी यह सुन मैं भी उसी कन्या के साथ कन्यान्तःपुर में जाय यथेच्छ आनंद भोगा कभी विहारार्थ निज कान्ता के साथ बगीचे में वसन्तानुभव करते कलिंगनाथको देख पूर्व

बैर से कालिंग्रनाथ जयसिंह ने राजाको पकड़ कनकवतीको भी ले निज नगर में गया, मेरे वियोग में यह राजपुत्री अवश्य प्राण छोंडदेगी यह विचारतेही किसी अंध्रदेश से आये ब्राह्मण को देखा और उसने कहा कोई यक्ष कनक लेखाको चाहता उसीके यह जयसिंह मंत्र तंत्रादिकों को कररहा है यह सुन मैं सन्यासी का वेशधार शिष्य समूह कुछ साथ ले जयसिंह के देशको जाय किसी तालावके किनारें धूनीरमाय इसका भूत प्रेत मंत्र तंत्र विद्या में बहुत चातुर्य है यह प्रकट शिष्यों के द्वारा मैंने कराया यह सुन वहां राजा भी आया राजाको देखतेही मैं बोला राजन् ! कन्या रत्न के लाभ में आपका प्रश्न है वह यक्ष निवारण करना तो अशक्य है तौ भी आप तीन दिन ठहरिये मैं यत्न करता हूं वह भी तीन दिन विताय फिर आया मैं भी धूनी से लेकर सरोवर तक पहलेही सुरंग खोद बैठा था मैं उसे देख बोला राजन् इस तालावको पूर्व सफा कराय आधीरातमें स्नानकर गोतामार जो शब्द होगा उसको सुन फिर निकलतेही आपके प्रताप को न सह वह यक्ष भाग जायगा, वैसेही राजाने किया मैं भी तभी उसी सुरंग द्वारा सरोवरमें जाय जयसिंहको गुफा में लाय उसका शिर काट फिर उसीसरोवर से निकल राज भवन में जाय प्रातःकाल सिंहासन पर बैठ मंत्रियों से बोला देखी आपने दैवी शक्ति जो मेरा शरीर और स्वभाव यह दोनोंही बदल गये आज अवश्य नास्तिकोंका अधोमुख होगा यह सुन मंत्री भी जय २ कार कर यथा स्थान स्थापित हुए फिर मैं प्रियाकी सखी शशांक सेनाको बुलाय निज वृत्त

सुनाय तद्द्वारा प्रिया से भी कह वह राज्य कलिंगनाथकोदे उसी की आज्ञा से कनकलेखा को विवाहमें यहां पत्रसे आया वह राजबाहन सुन प्रसन्नानन हो कहा अपनी कथा यह वि-श्रुत से कह वह भी कहने लगा॥

इतिश्रीमत्पंडित गणेशप्रसादसूनुना रामस्वरूपशर्मणा कृतायां दशकुमारचरित भाषायां सप्तमउच्छ्वासःसमाप्तः

" विश्रुत चरितम् "

देव ! मैं विंध्याटवी के निकट अटन करते २ मुझे एक राजकुमार देख रोकर बोला सौम्य ! मेरे पिपासार्थ एकवृद्ध जल लेने को गया था वह भी गिरपडा यह सुन मैंने उसको निकाल कुमारको जल पिलाय कुछ खिलाय पूंछा आप कौन हैं तभी वहवृद्ध बोला सौम्य ! विदर्भ देशके राजा पुण्यवर्मा का पुत्र अनन्तवर्मा था वह कभी मंत्रियोंसे दण्डनीतिकोपढ़ अन्तःपुर में जाय आज मुझे दण्डनीति पढ़ाई है यह कहा तभी कोई पूर्णभद्रनाम कंचुकीबोली राजन् ! यही ब्राह्मण लोक नीति के बहाने धनही लूटतेहैं इससे इस सम्पत्ति और नवीन वयको क्यों नाश करते हो इन अप्सरोंके साथ शरीर प्राप्तका सुख अनुभव कीजिये राजा ने वैसेही किया, कभी अश्मकेन्द्र वसन्तभानु का मंत्रिपुत्र चंद्रपालित मुझे पिता ने निकाल दिया है यह बात बनाय कुछ गूढ़ पुरुषों को साथ ले राजाको कामशास्त्रकीही शिक्षा करने लगा राजाभी उसका उपदेश शास्त्रों के समान मानता था तभी राजा को प्रमत्त देख राज्य नष्टभ्रष्ट होनेलगा तभी वसन्तभानुने किभी

भानुवर्मा को सहायक कर राज्यको आक्रमण किया तबयही राजा अनन्तवर्मा ने कुंतलपति अवन्तिदेशके राजाकी वेश्या को बलात्कार बुलाय नृत्य देखा यह सुन कुन्तलपति वसन्त भानु यह दो मैत्रीकर मुरलापतिवीरसैनको बुलाया और राजा ऋचीकेश को वा कौंकणपति कुमारगुप्त को नासि क्याधिपति नागपाल इत्यादिको साथले अनंतवर्मा से युद्ध किया और उसको मार भी दिया तभी वसु रक्षितमंत्री राजा को नष्ट जान उसके पुत्र इस भास्करवर्मा और पुत्री मंजुवा-दिनी और मातारानी वसुंधराको साथले आतेश्ज्वरके कारण वह स्वर्ग लोकको सिधारा तबहमसब माहिष्मती नगरीको जाय अनंतवर्माके सौतेले भाई मित्रवर्माके इनसबको पहुंचा दिया मंजुवादिनी का ग्रहण और कुमार भास्करवर्माके मार ने की इच्छा यह देवी वसुंधरा जान मुझ नाली जंघके साथ इस कुमार को भेज दिया है फिर मैंने कहा क्या इसकी जाती है ? तभी वहनाली जंघ कहने लगा सौम्य ! पटने के वैश्य वैश्रवणकी पुत्री सागरदत्ता का पति कुसुमधन्वा उसकी जो पुत्री है वह इस राजकुमार की माताहै फिर मैं उस वृद्ध से बोला इस की माताकी और मेरे पिताकी एक हीननसाल है और विश्रुत मेरा पिता है यह कह उस को आलिंगन करा तभी एक किरातने दो मृगों के दो बाण मारे पर वह न मरे तभी में उससे धनुष ले एक ही बाण से उन दोनो मृगों को मार एक मृग किरात को दे अपर का भोजन कर सब को खिलाया फिर वही व्याध मुझ से कहा हुआ माहिष्मती के वृत्तान्त को कहने लगा सौम्य

में अभी शेर की खालैं बेच वहांही से चला आता हूं वह मित्रवर्मा भास्करवर्मा को मार अपने आधीन राज्य करना चांहता है किरात वाक्य सुन मैं नालीजंघसे बोला मंत्रिन् ! यह देवी से कहो मंत्र गुप्तकुमार की रक्षामें नियुक्त है और देश मे यह प्रकट करो कि कुमार को सिंह खागया यह सुन मित्रवर्मा मनमें आनन्द हो ऊपरसे दुःख कर देवी को समझावेगा और राजपुत्री को अभिलाषा करेगा तभी देवी एक पुष्पमालामेंविषलगाय,जो मैं पतिव्रताहूं तो यह अभीनष्ट हो, यह तो विषसे मरी जायगा फिर वही माला जलमें धो निज पुत्रीको पहरावै यह देख सब नगर वासी आश्चर्य में होजांयगे फिर यही देवी आपके द्वारा यह कहै चंडवर्मा से यह कन्या और अनाथ यह राज्य आपही ग्रहण कीजिये और हम दोनों कपाली फकीरी का वेशधर श्मशान में रहैंगे फिर देवीसे यह प्रगट करै यह पांचवें दिन चंडवर्मा मरजायगा और सिंहरूप से अब तो इस कुमार भास्कर वर्माकी मैंने रक्षा किया है एक ब्राह्मण के साथ इसी मेरे मंदिरमें से यह लड़का निकल राज्य करैगा और उसका सहायक यह ब्राह्मण का कुमार इसी मंजुवादिनी को विवाहैगा यह रात्रीमें रानी वसुंधरा को विन्ध्यवासिनी देवी ने स्वप्न दिया है, यह सुन वैसेही उस नाली जँघ वृद्धने किया, जो माला चंडवर्म्मा के गलेमें विष होगई वह मंजुवादिनी के गलेमें चन्दन सम शीतल होगई यह पातिव्रत हीका प्रताप है यह जान उस देशबासी सब देवीकी आ-

ज्ञानुसार चलते थे फिर कभी रानी हमें फकीर रूपमें पहिचान यह मैंने स्वप्न देखा है सो ठीकहै यह कह में नाली जंघ द्वारा राज भवनमें राजाको जान किला कूद उसको मार एक सुरंग खोद आभूषणादि पहर राज पुत्रके साथ वहांगया, तभी सब मनुष्यों के सम्मुख देखतेही वहां शनिने पूजाकी फिर कपाट कुपाट भेड़ जभी द्वारे निकली तभी हम दोनों उसी सुरंग द्वारा निकल मंजुवादिनी के साथ विवाह कर फिर उस सुरंग को भरदिया यह नागरिक जन भास्कर वर्माको पहिचान मुझे देवीदत्त जान भय मानने लगे फिर वहांका भास्करवर्मा को राज्यदे मेंभी वड़े आनन्द को अनुभव करता २ वहांरहा ॥

इतिश्रीमत्पंडित गणेशप्रसादसूनुना रामस्वरूपशर्मणा कृतायां दशकुमारचरित भाषायां अष्टमउच्छ्वासःसमाप्तः

"उत्तर पीठिका"

यह सब देश निवासी देवंश मुझको जान मेरेही प्रतापसे भयभीत होकर भास्कर वर्माको राज्य देनेकी अभिलाषा करने लगे और वसन्त वर्माके भी किंकर सब हमारी तरफ आय २ मिलने लगे तभी वसन्तवर्मा सैना ले युद्धार्थ आया तभी एकाएकी ही मैंने खड्गसे उसका शिर काट इसी राजकुमार को वह राज्य देदिया फिर देवी की आज्ञासे चण्डवर्मा के राज्यको निजाधीन कर मंजुवादिनीको वहीं सौंप यहां आपका दर्शन किया, इस कथाके कहतेही पर पुष्पपुर से एक पत्रिका आई राजवाहन उसको खोल सबको सुनाने लगा—

स्वस्ति श्री पुष्पपुरसे राजहंसकी राजवाहन को आशीर्वाद में सब कुमारों का राजवाहन का वनमें वियोग सुन वामदेव के आश्रम में जाय कैसे शकुन से आपने राजवाहन को विजयार्थ भेजा न जाने वह कहांगया यह कह निज प्राण त्यागकी मैंने अभिलाषा की यह सुन उन त्रिकालवेदी मुनिने कहा राजन्! धैर्य्य धरिये सब कुमार दशों दिशाओंको जीत चंपामें आय मिलैंगे, अब आपके आनेकी खबर सुन मैंने आपके पास पत्रिका भजी इसको देखतेही देखते जल्दी आप चले आओ नहीं तो अपनी माता और मुझे जिन्दा न देखोगे यह पत्र सब कुमार सुन अपने २ राज्यों में मंत्रियों को स्थापनकर मान सारको जीत उसी के कारागार से पुष्पोद्भव को छुटाय अवन्ति सुन्दरी को ले पुष्प पुरमें आय राजहंस को प्रणामकर बैठे और अपना २ वृत्तान्तभी सुनानेलगे फिरभी एकबार राजहंस की आज्ञानुसार दशोदिशाओं को जीत आये तभी वामदेवकी आज्ञा पाय राजहंसने संन्यास लिया और यथा योग्य सबकुमारोंको दशोदिशों का राज्य दिया और मगधदेशका अभिषेक राजवाहन को किया फिर वही कुमार परस्पर मैत्री से स्वराज्यों को करतेहुए परमानन्द को प्राप्त हुये ॥

इति श्रीमत्पंडितगणेशप्रसाद सूनुनारामस्वरूपशुक्लेनकृतायां दशकुमार चरित्रभाषायां पूर्वपीठिका समाप्ता.

विज्ञापन ।

प्रकटहो कि-जिन साहबोंको इकट्ठी किताबें खरीदनी होवें हमसे पत्रव्यवहार करैं तो उनको बहुत किफायत के साथ देंगे नीचे लिखी पुस्तकें हमारे यहां मिलसक्ती हैं ॥

संस्कृतसागर भाषाटीका ।

इसमें संस्कृत सीखनेकी रीति व शिक्षा इतिहास अनेक प्रकारकी बातें भरी हैं देववाणी संस्कृत विद्या सीखनेवालों के बहुत उपयोगी है ।

श्रुतबोध सान्वय भाषाटीका ।

इस में प्रथम श्लोक नीचे पदच्छेद फिर अन्वय नीचे संस्कृत टीका तिसके नीचे भाषाटीका इस रीतिसे स्थापित किया है कि विद्यार्थियों को पूर्ण सहारा पहुंचता है ॥

परीक्षाचक्रावली	।=,
जन्माष्टमी कथा भा० टी०	।–,
आदित्यव्रत कथा	≡,
सूर्यकवच	=,
शीलनिरूपणाध्याय भा० टी०	≈

पत्रादि इसपते से भेजना चाहिये ।

पं० रामस्वरूप शुक्ल
कठगर (बीच)
मुरादाबाद. (सिटी)